महाकविश्रीहर्षप्रणीतं

नैषधीयचरितम्

'यमुना' संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतम्

(सर्गः 9-10)

व्याख्याकारः

डॉ. अरविन्दकुमारः

सहाचार्यः, साहित्यविभागः,

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

अभिषेक प्रकाशन

दिल्ली लखनऊ

(भारत)

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है।

प्रकाशक :

अभिषेक प्रकाशन

डी-30, दिलीप नगर, न्यू मोती नगर, नई दिल्ली-110015

फोन : 011-46510739 मो. : 9811167357, 8368127189

ई-मेल : abhishekprakashan@gmail.com

शाखा :

अभिषेक प्रकाशन

डी-34, सेक्टर-I, आशियाना, लखनऊ-226024

मो. : 8368127189, 9871390351

प्रथम संस्करण : 2021

© प्रकाशक

ISBN 978-81-8390-347-9

मूल्य : ₹650/-

अक्षरसंयोजक :

ए-वन ग्राफिक्स

बी-139, प्रथम तल, करमपुरा, नई दिल्ली-110015

मो. : 9811167357, 8368127189

मुद्रक :

आर. आर. प्रिंटर्स, दिल्ली-110053

NAISHDHYCHARITAM (Sanskrit Text Book)

By Dr. Arvind Kumar

Price : ₹ 650/-

भूमिका

संस्कृत साहित्य के महाकाव्यों में नैषधीयचरित महाकाव्य का स्थान अन्यतम है। बृहत्त्रयी के अन्तर्गत यह महाकाव्य परिगणित है। [illegible] एक [illegible] एक [illegible] एक [illegible] एक [illegible] एक महाकाव्य के रूप में [illegible] है वह नैषधीयचरित महाकाव्य। नैषध की [illegible] की दृष्टि से इसका समालोचक कहते हैं कि -

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
नैषधे पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

नैषध महाकाव्य संस्कृत साहित्य में सर्वोत्तम है। कालिदास की प्रतिष्ठा भी सर्वोपरि है किन्तु शास्त्र और पाण्डित्य में श्रीहर्ष कम नहीं। नैषध काव्य में 'पदलालित्यम्' तो दर्शनीय है साथ साथ 'शास्त्रपाण्डित्यम्' भी अवलोकनीय है। यह तो नैषधकाव्यानुशीलन की विशेषता है कि न तो केवल कवि है और न केवल पण्डित अपितु उभयकवि है। इसीलिए राजशेखर ने काव्यमीमांसा में कहा है कि जो कवि शास्त्रज्ञान की प्राप्ति कर काव्य कल्पना में सुन्दरता को पिरो दे ऐसे उभय कवि और शास्त्रकवि दोनों में श्रेष्ठ कहा है -

"उभयकविस्तूभयोरपि वरीयान्
यद्युभयत्र परं प्रवीणः स्यात्" (काव्यमीमांसा अध्याय 5)

अतः नैषध का पदलालित्य की विशेषता इस प्रकार परिलक्षित होती है -

"तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघ? क्व च भारविः?॥"

श्रीहर्ष इस महाकाव्य का रचयिता है। इसमें द्वाविंशति सर्ग है। इस में श्लोकों की रचना उपजाति, रथोद्धता, वसन्ततिलका, स्वागता, द्रुतविलम्बित, रथोद्धता, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी और अनुष्टुप् आदि छन्दों के द्वारा किया गया है।

नैषधीयचरित का उपजीव्य महाभारत के वनपर्वस्थित नलोपाख्यान। नल के अनुपम गुणों का विस्तृतवर्णन इसमें किया गया है। दमयन्ती के पूर्वानुराग की भी चर्चा किया गया। बाद में नल की दमयन्ती में आसक्ति, दमयन्ती के विरह से अधीर होकर राजा वनविहार के लिए जाते हैं, वहाँ तालाब के पास एक हंस को पकड़ते हैं। मनुष्य की वाणी में उसका विलाप सुनकर उसको छोड़ देते हैं। वह फिर आकर उनसे दमयन्ती का वर्णन करता है। दमयन्ती के साथ राजा का सम्बन्ध कराने का प्राण कर दमयन्ती के पास जाता है। हंस दमयन्ती से राजा नल के सौन्दर्य और गुणों का वर्णन करता है। राजा भीम दमयन्ती के स्वयंवर का व्यवस्था करते हैं। नारद के मुख से स्वयंवर का समाचार सुनकर इन्द्र, यम वरुण और अग्नि के साथ दमयन्ती के स्वयंवर में जाने के लिए आग्रह प्रकाश कर जाते है। मार्ग में नल को देखकर अपने कौशल से उन्हें अपना दूत बनाते है। स्वयंवर समारोह भव्य रूप से आयोजित होता है। चारों देवता नल का रूप लेकर उपस्थित होते हैं। नल कौन है यह निश्चय करने में असमर्थ होकर दमयन्ती व्याकुल होती है। अन्तिम समय में देवगण उनकी पति भक्ति से प्रसन्न होकर अपने चिह्नों को प्रकट करते हैं तब दमयन्ती के साथ नल का विवाह होता है। वापस आते समय कलि के साथ देवताओं का सामना होता है कलि के नास्तिकवाद प्रकाशित करने पर देवगण उसका खण्डन करते हैं। कलि नल के ऊपर कुपित होकर उनको पीड़ित करने का संकल्प करके द्वापर के साथ अन्यत्र किसी स्थान न देखकर उनके बाग में रहकर अवसर ताकता है। अन्तिम तौर पर नल और दमयन्ती की मिलनरात्रि का मनोहर वर्णन हुआ है।

विशेष रूप से इस पुस्तक में नवम और दशम सर्ग मेरे द्वारा रचित है। इस नवम सर्ग में नलवर्णित इन्द्र आदि देवताओं के प्रणयसन्देश को अनुसुना-सा कर दमयन्ती की प्रसन्न और लज्जित होना तथा नल का इन्द्र आदि देवताओं को दमयन्ती का सब वृत्तान्त सुनाना वर्णित है। उसी प्रकार दशमसर्ग में दमयन्ती के स्वयंवर में सभी देशों के राजकुमार सम्मिलित हुए। सरस्वती के द्वारा राजाओं के यश गान कर परिचय प्रदान की। उस सुन्दरी दमयन्ती को देखकर स्वयंवर सभा मुग्ध हो गया था। पाठकों से अनुनीय अनुरोध है कि पुस्तक की विषय-वस्तु की गुणवत्ता में सुधार हेतु अपने सुझाव अवश्य प्रेषित करें। ये सुझाव पुस्तक की स्वीकृति का सदैव आधार रहेंगे।

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 117 पुष्पम्

शिशुपालवधमहाकाव्यानुशीलनम्

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शुकदेवभोई

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः

शोध-प्रकाशनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-110016

प्रकाशक:
शोध-प्रकाशनविभाग:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीन:

प्रकाशनवर्षम् : 2023

ISBN : 81-87987-94-4

मूल्यम् : ₹ 240.00

मुद्रक:
डी.वी. प्रिन्टर्स
97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

9. शिशुपालवधे भौगोलिकस्थानानि — 71-75
- डॉ. अरविन्दकुमार:

10. शिशुपालवधे राजधर्म: — 76-86
- डॉ. अनिलकुमार:

11. शिशुपालवधमहाकाव्ये रसविचार: — 87-94
- डॉ. शक्तिशरणशर्मा

12. महाकविमाघस्य स्थान-कालविचार: — 95-102
- डॉ. मंजू शर्मा

13. शिशुपालवधमहाकाव्ये रीतिविचार: — 103-111
- डॉ. तांपी शर्मा

14. शिशुपालवधमहाकाव्ये वर्णितं प्रकृतिचित्रणम् — 112-121
- डॉ. स्वाति

15. शिशुपालवधे सामाजिकमूल्यानां विवेचनम् — 122-136
- डॉ. नरेन्द्रकुमार:

16. शिशुपालवधे छन्दोविवेचनम् — 137-147
- डॉ. रिंकेशभूदला

17. शिशुपालवधे अवतारवाद: — 148-155
- डॉ. शिप्रा सिंह

18. शिशुपालवधे शब्दशास्त्रसन्दर्भा: — 156-166
- डॉ. संजयकुमारचौबे

19. शिशुपालवधे पौराणिकतत्त्वानि — 167-175
- श्रीचन्द्रप्रकाशतिवाड़ी

20. शिशुपालवधमहाकाव्ये गुणविचार: — 176-182
- श्रीदेवकीनन्दनशर्मा

21. बृहत्त्रय्यां शिशुपालवधमहाकाव्यस्थानम् — 183-193
- श्रीशैलेन्द्रविक्रम:

शिशुपालवधे भौगोलिकस्थानानि

डॉ. अरविन्दकुमारः

सहाचार्यः, साहित्यविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिय-

संस्कृतविद्यापीठम्, नई दिल्ली-16

महाकविश्रीमाघप्रणीतं शिशुपालवधमहाकाव्यमस्ति। तत् विंशति-सर्गात्मकम् अस्ति। तृतीयसर्गे सप्ततिसंख्यातः द्व्यशीतियावत् श्लोके समुद्रस्य वर्णम् अस्ति। चतुर्थसर्गे प्रथमश्लोकतः अष्टषष्टीश्लोकं यावत् रैवतकपर्वतस्य वर्णनमस्ति। सप्तम सर्गे चतुर्विंशति श्लोकतः एकत्रिंशत् श्लोकं यावत् उपवनमनोहारिणिवर्णनमस्ति। द्वादश सर्गे सप्तषष्टीश्लोकादारभ्य सप्तति श्लोकं यावत् यमुनायाः वर्णनमस्ति।

समुद्रस्य वर्णनम्

भगवतः श्रीकृष्णस्य राजधानी सुवर्णमयी द्वारिकानगरी अस्ति सा च समुद्रं विकीर्णं कृत्वा ऊपरि निर्गच्छति वडवानलमिव तत्र ज्वाला शोभायमाना आसीत्। तत्र आपणेषु बहुमूल्यानि रत्नानि सहस्र विद्यमानाः आसन्। तस्य अट्टालिका परकोटौ अत्यधिकमुन्नतमत्यन्त सुवर्णमयी सदृशमासीत्। तस्योपरि विभिन्नं चित्रं निर्मितं विद्यते तथाहि सञ्जीकृतमिव शोभायमानम् आसीत्। स्त्रियः अप्सरसमिव यथा सुन्दरं प्रतीयन्ते तथैव मानरहितं भूत्वा निरन्तरताः कामोत्कण्ठिताः आसन्। भगवतः श्रीकृष्णस्य स्वर्णमय्यां द्वारिकानगर्यां पश्यन् अपि यदा बहिर्निर्गच्छति फेनादिकं कोलाहलं च तरङ्गमेव गाम्भीर्य ध्वनिं प्रस्फुटति, तथा च मृगो सदृशं भ्रमोत्पन्नमकुर्वत्। एवञ्च तत्र शस्यश्यामलपरिपूर्णवनादिसमूहः तस्य द्वारिकानगरस्य शोभां वर्धयामास। इत्थमपि तत्र प्रतीयमानमासीत् यत् तटादिषु मुक्तामाणिक्यादितत्वं सर्वत्र विकीर्णमासीत्। शीतलमन्दसुगन्धसम्वलितपवनसंयोगेन तस्य उपभोगेन